Pawar (1)

(यज्ञ द्वारा उन्माद चिकित्सा) ~~(निवारण)~~

यज्ञ शब्द देवपूजा, संगतिकरण और दान[1] अर्थद्योतक यज् धातु से नङ् प्रत्यय करके निष्पन्न होता है। जिसके द्वारा ईश्वर की आराधना, विद्वानों का सत्कार, संगतिकरण अर्थात् मेल और हवि का दान किया जाता है, यज्ञ कहलाता है। शतपथ ब्राह्मणकारने यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म[2] की संज्ञा दी है) जिसके करने से हम सभी कामनाओं को पूर्ण कर सकते है।[3] यज्ञ ~~केवल कर्मकाण्ड प्रधान न होकर~~ का विषय केवल आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे प्रयुक्त कर्मकाण्ड ही नही है अपितु यज्ञ का अपना वैज्ञानिक महत्त्व भी है जिसके द्वारा हम विभिन्न प्रकार की शारीरिक व्याधियों ~~अथवा~~ या मनोविकारों (Psychological Disorder) को समूल नष्ट कर सकते है जिस प्रकार बांध के द्वारा जल के प्रवाह को रोक लिया जाता है उसी प्रकार यज्ञाग्नि के द्वारा भी रोगों का उपचार किया जा सकता है।[4] ~~निस्संदेह इस वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा~~

आज के समय मे मनुष्य शारीरिक व्याधियों

1- यज देवपूजा संगतिकरणदानेषु - भ्वादिगण / धातुपाठ

2- शतपथ ब्राह्मण - 1/7/1/5

3- स्वर्गकामो यजेत - (...1/1/17)

4- यथा वृत्र इमा आपस्तस्तम्भ विश्वधा यतीः।
एवा ते अग्निना यक्ष्मं वैश्वानरेण वारये॥ अथर्व० 6/85/3

(3)

से तो पीड़ित है साथ ही मानसिक व्याधियों से भी बहुत ज्यादा ग्रस्त है जैसे तनाव (stress) उत्साह-विषाद (Panic-Depression) अति तीव्र उत्साह (Hyper acutemania or Delirious mania) सरल विषाद (Simple Depression) तीव्र विषाद (Acute Depression) ~~जैसी~~ उन्माद (Mania) जैसी बीमारियों (Disease) ने मानव को जकड़ा हुआ है। प्रस्तुत शोध-पत्र में हम मुख्य रूप से उन्माद (Mania) को यज्ञ के द्वारा किस प्रकार रोका जा सकता है। उन्माद की अवस्था वैसी अवस्था होती है जिसमें व्यक्ति की मनोदशा (mood) एवं आत्म-सम्मान बढ़ा होता है, विचारों की उड़ान की ऊँचाई होती है, मनोपेशीय क्रियाएँ (Psychomotor activity) अधिक होती है, वाचालता सुखाभास (Euphoria) अधिक होती है, तथा उसमें ... का भाव भी होता है। इसमें प्रायः रोगी को मानसिक अस्पताल में उपचार के लिए ले जाना आवश्यक हो जाता है।[1] या इसका निवारण यज्ञ के द्वारा भी किया जा सकता है।

(1) आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, डॉ० अरुण कुमार सिंह

उन्माद (Mania)[1] शब्द मूल रूप से ग्रीक भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ है "क्रोध करना" या क्रोधित होना

Dr. Barrios के अनुसार जब लोग उन्माद युक्त होते हैं, तो आमतौर पर अधिक ऊर्जा होती है। वे अक्सर बहुत मजबूत भावनाएं रखते हैं, और उनकी मनोदशा बहुत जल्दी बदल सकती है।[2]

उन्माद एक लक्षण है न कि बीमारी। कई अलग-अलग चीजें उन्माद का कारण बन सकती हैं। इन चीजों में अवैध ड्रग्स और मस्तिष्क ट्यूमर शामिल हैं। हालांकि, ज्यादातर उन्माद द्विध्रुवीय विकार वाले लोगों में होता है। यही उन्माद की अवधि का कारण बनता है जो अवसाद की अवधि के साथ समाप्त हो जाता है।[3]

महर्षि चरक ने बुद्धिविभ्रम, मनोविभ्रम अथवा मन का अत्यन्त चंचल होना, दृष्टि का व्याकुल होना, अधीरता, असम्बद्ध बोलना, हृदय की शून्यता को उन्माद का लक्षण माना है।[4]

---

(4) धीविभ्रमः सत्त्वपरिप्लवश्च पर्याकुला दृष्टिरधीरता च।
अबद्धवाक्त्वं हृदयं च शून्यं सामान्यमुन्मादगदस्य लिंगम्॥
च.नि. 9/5

(1) Mania, Henry George Liddell, Robert Scott, A Greek English Lexicon, at Perseus

(2) History of Psychiatry 15(57pt 1) 105-124 Barrios GE

(3) Diagnostic and statistical manual of mental disorders: DSM-5 Washington, DC: American Psychiatric Association

प्राचीन काल से अब वर्तमान समय तक चिकित्सा प्रणाली कहीं से कहीं जा चुकी है। चिकित्सा प्रणालियों के क्रमिक विकास में वेद के अन्तर्गत ही कई प्रकार की पद्धतियों का उल्लेख मिलता है। जब सब प्रकार के उपचार और वैद्य रोगी, रोगी को स्वस्थ करने मे असमर्थ हो जाते हैं। तब वह रोगी को यज्ञादि के माध्यम से स्वस्थ किया जाता था। // यज्ञ में प्रयुक्त विशेष वृक्ष की समिधा (पीपल, आम, गूलर, जामुन) और रोगानुकूल औषधि मिलकर वाष्प के रूप मे सांस द्वारा शरीर की रक्त प्रणाली मे पहुंचते ही तत्काल प्रभाव दिखाती है इसलिए वैदिक यज्ञ चिकित्सा का अपना विधान है। विधानानुसार किए गए यज्ञ का परिणाम भी अवश्य ही फलदायी होता है अतः उन्माद रोग निवारण के लिए भी उपयुक्त विधान किया गया है निश्चित ही उन्माद से मुक्ति प्रदान कर सकता है। अथर्ववेद मे यज्ञाग्नि को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि उन्मत्त बंधा हुआ पुरुष, सुनियन्त्रित किया हुआ असम्बद्ध प्रलाप कर रहा है, यह पुरुष उन्माद से मुक्त हो। उन्माद मुक्त होने पर भी वह हविर्भाग प्रदान करता रहे जिससे भविष्य में भी कभी इसे उन्माद न हो।[1]

(1) इमं मे अग्ने पुरुषं मुमुग्ध्यं यो बद्धः सुयतो लालपीति।
अतोऽधि ते कृणवद् भागधेयं यथाऽनुन्मदितोऽसति॥
अथर्ववेद - 6/111/1

~~पाकड़~~
वट — Ficus Moraceae

पीपल — Ficus Religiosa

गूलर — Ficus racemosa

पाकड़ — Mulberry family

बेल Aegle Mermelos

चन्दन Santalum album

देवदार Cedrus deodar

खैर — Senegalia Cetechu

शमी — Prosopis cineraria

पलाश — Butea Monosperma

अथर्ववेद में पुनः प्रार्थना की गई कि हे मनुष्य यदि तेरा मन उन्माद-युक्त हो गया है तो यज्ञाग्नि तेरे मन को पूर्णतः शान्त कर दे। ऐसी यज्ञ चिकित्सा करता हूं जिससे कि मन की उन्मादता का निवारण हो जाए।[1]

इन मन्त्रों के माध्यम से स्पष्ट होता है कि यदि कोई मनुष्य उन्मत्त हो जाए और उसकी अवस्था ऐसी हो जाए कि वह वृथा अलाप करता रहे, यज्ञ चिकित्सा के माध्यम से निवारण सम्भव है।

उन्माद या मानसिक रोगों के निवारण के लिए ~~सर्वप्रथम~~ यज्ञ हेतु समिधा चयन महत्त्वपूर्ण है जिससे कि उद्विग्न-उत्तेजित मन-मस्तिष्क को शीतलता प्राप्त हो उसके लिए सुगन्धित वृक्ष अर्थात् (वट, पीपल, गूलर, पाकर, बेल, चन्दन, देवदार, खैर, शमी पलाश) आदि का प्रयोग करना चाहिए, जिससे यज्ञोपचार द्वारा शीघ्र निवारण हो सके।[2] शीतलता रहित समिधाओं का प्रयोग मानसिक रोगों के उपचार में सर्वथा वर्जित है।

यज्ञोपचार में प्रत्येक रोग के लिए भिन्न-भिन्न समिधाओं के साथ-भिन्न प्रकार की सामग्रियों का विधान है, जिससे कि पीडित को शीघ्र ही

(1) अग्निष्टे निशमयतु यदि ते मन उद्युतम्।
कृणोमि विद्वान् भेषजं यथाऽनुन्मदितोऽससि॥
अथर्ववेद - 6/111/2

(2) यज्ञचिकित्सा, ब्रह्मवर्चस, पृष्ठ सं.-222

(1) आक-मूल - Calotropis gigantea
(2) अश्वगंधा Withania Somnifera
(3) इलायची Elettaria Cardamomum
(4) कूठ Saussurea Costus
(5) अजवायन Trachyspermum ammi
(6) अपामार्ग Achyranthus
(7) अजमोद Apium graveolens
अतिबला - Sida rhombifolia
अपराजिता - Clitoria ternatea
अनंतमूल - Hemidesmus Indicus
इन्द्रजौ - Holarrhena Pubscens
इन्द्रायण - Citrullus Colocynthis
जायफल - Myristica frangrans
केसर - crocus Sativus
कुचला - Strychnos nuxvomica
कुटकी → Pichrorhiza Kurroa
कपास बीज - Gossypium
काली मिर्च - Piper Nigrum
काला जीरा - Elwendia Persica
सफेद जीरा - Cuminum Cyminum
करंज के बीज - Milletia Pinnata
कुश - Cannabis Indica
गोरखमुण्डी - Saphaeranthus Indicus
गुग्गुल - Commiphora wightii

लाभ प्राप्त हो सके।) इसी प्रकार उन्माद रोग के निवारण हेतु भी यज्ञ सामग्री में सात्विक सुगन्धित, बल्य एवं मेध्य रसायनयुक्त वनौषधियाँ मिलाई जाती है। क्योंकि यह रोग नाना विध होता है इसलिए इसमें रक्षोघ्न एवं भूतघ्न औषधियां भी आवश्यक होती हैं; इन औषधयुक्त आहुतियों को यज्ञाग्नि में प्रदान करने पर यज्ञाग्नि से निकलने वाली धूम्र ऊर्जा नासिका छिद्रों एवं रोमकूपों के माध्यम से शरीर के अन्दर पहुंचकर रोगी के मन मस्तिष्क के स्नायुमण्डल को शीतलता प्रदान कर उसे चैतन्यता (Conciousness) प्रदान करती है इससे मस्तिष्कीय अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ स्वास्थ्यप्रद, सुखद एवं मधुर रसायनों का स्राव करने लगती है, जिसके प्रभाव से व्यक्ति स्वस्थ होने लगता है और धीरे-धीरे सामान्य अवस्था में आ जाता है।[1]

उन्माद रोग हेतु प्रयुक्त सामग्री (2)

1. आक-मूल
2. अश्वगंधा
3. इलायची
4. कूठ
5. अजवायन
6. अपामार्ग
7. अजमोद
8. अतिबला
9. अपराजिता
10. काली अनंतमूल
11. इंद्रजौ
12. इन्द्रायण
12. कायफल
13. कुचला
14. केसर
15. कुटकी
16. कपास के बीज
17. काली मिर्च
18. काला जीरा
20. सफेद जीरा
21. करंज के बीज

(1) यज्ञ चिकित्सा, ब्रह्मवर्चस, पृष्ठ सं. - 195

Should be Latin names

अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र - ब्रह्ममुनि परिव्राजक

(22) कुरंजन
(23) काकड़सिंगी
(24) कपूर
(25) कुश
(26) खस की जड़
(27) लालगुंजा
(28) गोरखमुंडी
(29) गजपीपल
(30) गिलोय
(31) गुग्गुल
(32) चंदन
(33) चित्रक
(34) चीड़ का बुरादा
(35) जटामांसी
(36) ज्योतिष्मती के बीज
(37) जलकुंभी
(38) तिल
(39) तगर
(40) तालीसपत्र
(41) तुलसी
(42) दालचीनी
(43) दूर्वा
(44) देवदार
(45) धूपसरल
(46) निशोथ
(47) नागकेसर
(48) नागरमोथा
(49) नीमपत्र
(50) पेठे के बीज
(51) प्रियंगु
(52) पिप्पलामूल
(53) पिप्पली
(54) पाठा
(55) मीठी बच
(56) बहेड़ा
(57) बला
(58) भिलावा
(59) मुलहठी
(60) मंजीठ
(61) मैनफल
(62) मेढ़ासिंगी
(63) मंडूकपर्णी
(64) राल
(65) रेवंदचीनी
(66) लोध्र
(67) लाख
(68) लौंग
(69) शंखपुष्पी
(70) शतावर
(71) सर्पगंधा
(72) सरसों
(73) सिरस के बीज
(74) सौंठ
(75) सौंफ
(76) सहिजने के बीज
(77) सुगंध कोकिला
(78) सोमलता
(79) हींग
(80) हिंगपुत्री
(81) हलदी
(82) दारुहलदी
(83) हरड़
(84) त्रायमाण
(85) आमला
(86) सरेसा कहरुवा (अंबर)

(1) यज्ञ चिकित्सा - ब्रह्मवर्चस - पृष्ठ से 176

23:19

भारतीय दंड संहिता के अंदर यह धारा 497 आती है जिसके अंतर्गत अगर कोई विवाहित महिला के साथ कोई गैर मर्द सम्बन्ध बनाता है तो उस व्यक्ति के खिलाफ कानूनी कारवाई की जा सकती है लेकिन इसमें सबसे जरुरी बात ये है कि शिकायत विवाहित महिला के पति की तरफ से की जानी चाहिए और ऐसे मामले में दो तरह की स्थिति बनती है।

पहली – अगर इस तरह के संबंधो में महिला की सहमति नहीं हो तो इस स्थिति में उस पुरुष के खिलाफ रेप का केस बनेगा और उसी के हिसाब से उस पर अपराधिक मुकदमा चलेगा।

दूसरी – अगर इस तरह के विवाहेतर संबंधो में महिला की सहमति हो तो भी उस पर महिला की पति की तरह से की

उक्त सामग्री को सामान मात्रा में कूटकर उनका दरदरा पाउडर बनाकर यज्ञाग्नि में आहुति प्रदान करने से उन्माद रोग में लाभ प्राप्त होता है।

यज्ञ चिकित्सा की श्रेष्ठता यही है कि इसमें रोगी को औषधि खाने की आवश्यकता नहीं होती अपितु इसके द्वारा शरीर में औषधि के तीव्र प्रभाव से अधिक शीघ्र शरीर पर अपना प्रभाव डाल देती है। यज्ञाग्नि के इस महान गुणकारी परिणाम स्वरूप ही हमारे पूर्वजों ने अग्नि को देवों का मुख स्वीकार किया है।[1]

एलोपैथी की सभी कीटाणुनाशक औषधियों के सम्बन्ध में सभी डॉक्टर एकमत हैं कि वे शरीर को हानि पहुंचाए बिना कीटाणुओं का नाश नहीं कर सकती है। जबकि यज्ञचिकित्सा के द्वारा ऐसे सूक्ष्मातिसूक्ष्म कणों का उत्सर्जन होता है, जो शरीर को हानि पहुंचाए बिना सभी रोगों को समूल नष्ट कर सकता है अतः वैदिक यज्ञ व यज्ञ चिकित्सा का अपना शास्त्रीय विधान है विधानानुसार यज्ञ के द्वारा हम निस्संदेह उन्माद से मुक्त हो सकते हैं।

(1) अग्निर्वै देवानां मुखम्

गयी शिकायत पर कारवाई की जा सकती है और यह कारवाई धारा 497 के अनुसार होगी और इसे व्यभिचार की श्रेणी में डाला जायेगा।

अब इसमें विवादित बात ये है कि अगर महिला के पति को ऐसे संबंधो से कोई आपत्ति नहीं है तो ऐसे में उस पुरुष पर किसी तरह की कारवाई नहीं की जा सकती है तो इस से यही बात जाहिर होती है कि धारा 497 के अनुसार महिला की बात के कोई मायने नहीं है। साथ ही देखने वाली बात ये है कि ऐसे मामले में महिला के खिलाफ केस नही हो सकता है जिसने सम्बन्ध बनाये या सम्बन्ध बनाने के लिए सहमति दी। अगर इस कानून की ठीक से व्याख्या की जाये तो इस से मालूम होता है कि कंही न कंही महिला को शादी के बाद पति की सम्पत्ति के तौर पर दर्शाया गया है और सारा विवाद इसी वजह से है। बहुत से संगठन और बुद्धिजीवी इस मामले पर अपनी राय रख चुके है। बकायदा सुप्रीम कोर्ट पर इस मामले में अर्जी भी लग चुकी है कि जब ऐसे केस में पुरुष पर केस हो सकता है तो महिला पर भी होना चाहिए लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इसे खारिज कर दिया। गौर करने वाली बात ये भी है कि वो दूसरा पुरुष जिसने किसी और के साथ सम्बन्ध बनाये वो अगर शादीशुदा हो तो उसकी पत्नी को ये शिकायत करने का अधिकार नहीं है कि उसके पति ने किसी और के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाये।

शिकायत कैसे करें – साथ ही ऐसे मामलों में सीधा थाने में शिकायत नहीं की जा सकती है और इसके लिए पति को